बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय एक

पवित्रशास्त्र में नैतिक शिक्षा

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:28) 4

II. परिभाषा (1:55) 4

A. परमेश्वर और आशीषें (3:40) 4

1. दैवीय प्रकृति (4:32) 5

2. दैवीय कार्य (6:28) 5

B. विषयों की चौड़ाई (8:55) 6

C. विषयों की गहराई (11:48) 7

III. त्रिरूपीय मापदण्ड (17:16) 8

A. सही उद्देश्य (21:13) 9

1. विश्वास (21:25) 9

2. प्रेम (24:01) 10

B. सही स्तर (26:43) 11

1. आज्ञाएं (27:40) 11

2. सारा पवित्रशास्त्र (30:41) 12

3. सामान्य प्रकाशन (33:42) 12

C. उचित लक्ष्य L (35:15) 13

IV. त्रिरूपीय प्रक्रिया (39:22) 13

A. प्रवृतियां (40:14) 13

B. दृष्टिकोण (42:28) 14

1. परिस्थिति-संबंधी (45:19) 15

2. निर्देशात्मक (49:02) 15

3. अस्तित्व-संबंधी (50:38) 15

C. परस्पर निर्भरता (55:15) 16

V. उपसंहार (59:52) 17

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 18

उपयोग के प्रश्न 24

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:28)

II. परिभाषा (1:55)

नैतिक शिक्षा नैतिक रूप से गलत और सही, भले और बुरे का अध्ययन है।

मसीही नैतिक शिक्षा : वह धर्मविज्ञान जिसे निर्धारित करने के उन साधनों के रूप में देखा जाता है कि कौनसे मनुष्य, कार्य और स्वभाव परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करते हैं और कौनसे नहीं।

A. परमेश्वर और आशीषें (3:40)

हमारी परिभाषा अच्छे या बुरे, अथवा सही या गलत जैसे शब्दों की अपेक्षा परमेश्वर और उसकी आशीष पर ध्यान देती है। वे बातें जो परमेश्वर की आशीष को प्राप्त करती हैं, वे अच्छी और सही हैं, वहीं वे बातें जो उसकी आशीष को प्राप्त नहीं करती, वे गलत और बुरी हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. दैवीय प्रकृति (4:32)

स्वयं परमेश्वर सही और गलत, अच्छे और बुरे का परम स्तर है।

परमेश्वर अपने से बाहर किसी स्तर के प्रति उत्तरदायी नहीं है।

2. दैवीय कार्य (6:28)

परमेश्वर के कार्य नैतिकता के स्तर को दर्शाते हैं।

आशीषें देने के द्वारा परमेश्वर सही और अच्छे को प्रमाणित करता है। वह आशीषों को रोकने और श्राप देने के द्वारा अपनी घृणा को दर्शाता है।

बहुत बार बाइबल बातों को प्रत्यक्ष रूप से अच्छा या बुरा कहने की अपेक्षा परमेश्वर के प्रत्युत्तरों के आधार पर उन्हें सही और गलत ठहराती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. विषयों की चौड़ाई (8:55)

अतीत में नैतिक शिक्षा को धर्मविज्ञान के उपखण्ड के रूप में देखा जाता था। नैतिक शिक्षा के शिक्षकों ने धर्मविज्ञान और जीवन के बहुत ही छोटे भागों से व्यवहार किया था।.

मसीही नैतिक शिक्षा मसीही जीवन के हर पहलू को स्पर्श करती है।

धर्मविज्ञान की प्रत्येक शाखा हमें कुछ बातों पर विश्वास करने, कुछ कार्यों को करने, और कुछ संवेदनाओं को महसूस करने की अगुवाई देती है। इसलिए, संपूर्ण धर्मविज्ञान में नैतिक शिक्षा शामिल होती है।

धर्मविज्ञान संपूर्ण जीवन के साथ परमेश्वर के वचन को लागू करना है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. विषयों की गहराई (11:48)

नैतिक शिक्षा न केवल व्यवहार को संबोधित करती है, बल्कि व्यक्तिगत स्वभावों और प्रकृतियों को भी संबोधित करती है।

पवित्रशास्त्र स्वभावों को नैतिक रूप से सही या गलत मानता है।

पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि हमारी भावनाएं नैतिक रूप से सही या नैतिक रूप से गलत हो सकती हैं।

पवित्रशास्त्र नैतिक रूप से अच्छे और बुरे लोगों के बारे में बात करता है।

सभी अविश्वासी शारीरिक व्यक्ति होते हैं। उनकी प्रकृति बुरी है, इसलिए उनके कार्य और स्वभाव भी बुरे हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विश्वासियों में पवित्र आत्मा के वास के कारण नई प्रकृतियां पाई जाती हैं। विश्वासियों के पास पतित प्रकृति के लिए एक उपचार है और परमेश्वर के नैतिकता के स्तर के समान बनने की क्षमता है।

III. त्रिरूपीय मापदण्ड (17:16)

विश्वास का वेस्टमिनस्टर अंगीकरण अध्याय16 अनुच्छेद 7 :

"अविश्वासी लोगों के द्वारा किए गए कार्य शायद ऐसे कार्य हों जिनकी आज्ञा परमेश्वर देता है और वे उनके और दूसरों के प्रति भलाई करने वाले हों; परन्तु फिर भी वे विश्वास द्वारा शुद्ध किए गए हृदय से नहीं आते; न ही वे सही रूप में और न परमेश्वर के वचन के अनुसार किए जाते; न ही उनका कोई सही लक्ष्य होता है, अर्थात् परमेश्वर की महिमा; अतः वे पापमय होते हैं, और परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते, और न ही परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य को दिलवा सकते।"

अविश्वासी वे कार्य कर सकते हैं जो नैतिक जीवन जीने की हमारी परिभाषा के समान लगते हों: अर्थात् वे कार्य जो परमेश्वर की आशीष को लाते हों।

अविश्वासियों द्वारा किए गए कार्य सद्गुणी नहीं होते। वे इतने भले नहीं हैं कि परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें या उद्धार की आशीष को पा सकें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. सही उद्देश्य (21:13)

जब तक कोई कार्य सही उद्देश्य के साथ नहीं किया जाता, तब तक वह ऐसा कार्य नहीं होता जिसका पुरस्कार परमेश्वर आशीष के साथ देता है।

1. विश्वास (21:25)

ऐसे विश्वासी जिनमें पवित्र आत्मा वास करता है, वे ही ऐसे कार्य कर सकते हैं जिसका पुरस्कार परमेश्वर आशीषों के साथ देता है।

केवल विश्वासियों के पास ऐसे हृदय होते हैं जो विश्वास के द्वारा शुद्ध किए हुए होते हैं।

उद्धार प्रदान करने वाला विश्वास भले कार्यों को उत्साहित करता है। यह ऐसा विश्वास है जो केवल और केवल विश्वासियों में पाया जाता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. प्रेम (24:01)

हमारे कार्य व्यर्थ होंगे यदि वे प्रेम से प्रेरित नहीं होते हैं।

लाभकारी परिणाम उत्पन्न करने वाले कार्य और आत्मिक वरदान भी कोई पुरस्कार प्रदान नहीं कर सकते यदि वे प्रेम से प्रेरित नहीं होते।

प्रेम उस हरेक व्यवस्था का पहलू है जिसकी परमेश्वर हमसे आज्ञाकारिता की मांग करता है, इसलिए यदि हम प्रेम में होकर कार्य नहीं करते, तो हमारे द्वारा किया जाने वाला कोई भी कार्य उसके स्तर के अनुरूप नहीं हो सकता।

हमारा प्रेम परमेश्वर और पडोसी दोनों के लिए होना चाहिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. सही स्तर (26:43)

कार्यों के अच्छे होने के लिए उनका परमेश्वर के वचन, अर्थात परमेश्वर के प्रकाशन के स्तर के अनुसार किया जाना जरूरी है।

1. आज्ञाएं (27:40)

पवित्रशास्त्र की सभी आज्ञाओं की रचना हमारी अगुवाई के लिए की गई है।

जो पाप करता है वह व्यवस्था का विरोध करने का दोषी होता है, अर्थात् सभी प्रकार के पाप में व्यवस्था का विरोध पाया जाता है। हरेक पाप परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करता है।

लागू करने की प्रक्रिया जटिल है। एक परिस्थिति में आज्ञाकारिता दूसरी परिस्थिति की आज्ञाकारिता से अलग-अलग प्रतीत हो सकती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सारा पवित्रशास्त्र (30:41)

सही स्तर सारी बाइबल के प्रति समर्पण की मांग करता है। संपूर्ण रूप में परमेश्वर का वचन अच्छे कार्यों का मापदण्ड है।

पौलुस ने बल दिया कि संपूर्ण पवित्रशास्त्र नैतिक प्रशिक्षण के लिए लाभदायक है, और कि संपूर्ण पवित्रशास्त्र हमसे नैतिक मांगें करता है।

3. सामान्य प्रकाशन (33:42)

सृष्टि के माध्यम से दिए गए परमेश्वर के प्रकाशन को सामान्यतः "सामान्य प्रकाशन" कहा जाता है। यह अच्छे कार्यों के स्तर का भाग है।

अच्छे कार्य परमेश्वर के वचन के अनुसार होने चाहिए जैसा कि व्यवस्था, सारे पवित्रशास्त्र और सृष्टि में प्रकट किया गया है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. उचित लक्ष्य I (35:15)

अच्छे कार्यों के कई तात्कालिक लक्ष्य हो सकते हैं।

मसीही जीवन में सब कुछ इस प्रकार से किया जाना चाहिए जिससे परमेश्वर का सम्मान हो और उसे महिमा मिले।

परमेश्वर उन कार्यों को प्रमाणित करता है जो उसको महिमा देने के लिए किए जाते हैं और उन कार्यों की निन्दा करता है जो उसकी महिमा का विरोध करते हैं।

IV. त्रिरूपीय प्रक्रिया (39:22)

A. प्रवृतियां (40:14)

विश्वासी भिन्न-भिन्न तरीकों में जीवन के नैतिक निर्णय लेने का प्रयास करते हैं, परन्तु वे सब तीन मुख्य श्रेणियों में पाए जाते हैं।

- मसीही विवेक और पवित्र आत्मा की अगुवाई
- पवित्रशास्त्र
- कार्यों के परिणाम

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नैतिक निर्णय तभी सही रूप में लिए जा सकते हैं जब किसी विषय पर इन सभी तीनों दिशाओं पर ध्यान दिया जाता है।

नैतिक निर्णय एक विशेष परिस्थिति पर एक व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर के वचन को लागू करना होता है।

B. दृष्टिकोण (42:28)

नैतिक शिक्षा को तीन दृष्टिकोणों से देखा जाना चाहिए।

- परमेश्वर का वचन
- परिस्थिति
- मनुष्य

होने पाए कि प्रत्येक दृष्टिकोण के विचार दूसरे दृष्टिकोणों के विचारों को प्रभावित करे और सामर्थी बनाए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. परिस्थिति-संबंधी (45:19)

- समस्याएं
- कार्यों के परिणाम
- लक्ष्य

2. निर्देशात्मक (49:02)

परमेश्वर का वचन नैतिक शिक्षा का एक मानक, या स्तर है। जब हम बाइबल की ओर इसलिए देखते हैं कि वह हमें बताए कि हमें क्या करना है तो हम निर्देशात्मक दृष्टिकोण से नैतिक शिक्षा को क्रियान्वित करते हैं।

3. अस्तित्व-संबंधी (50:38)

जब हम नैतिक शिक्षा को उन प्रश्नों को पूछने के द्वारा देखते हैं जो उसमें मिले हुए लोगों के बारे में थे, तो हम अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण से नैतिक शिक्षा को क्रियान्वित कर रहे हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. परस्पर निर्भरता (55:15)

प्रत्येक दृष्टिकोण किसी न किसी रूप में देखी जाने वाली संपूर्ण नैतिक शिक्षा है।

जब जक हम किसी परिस्थिति को परमेश्वर के वचन के प्रकाश में नहीं जांचते, और इस बात को नहीं पहचानते कि मनुष्य होने के रूप में परिस्थिति का हम पर क्या प्रभाव पड़ता है, तो हमने परिस्थिति को सही तरीके से नहीं समझा है।

यदि हम हमारी परिस्थितियों और स्वयों पर पवित्रशास्त्र के वचनों को लागू नहीं कर सकते, तो हमने वास्तव में पवित्रशास्त्र को समझा नहीं है।

हम तब तक स्वयं को सही रूप में समझ नहीं सकते जब तक हम इसे इसकी परिस्थिति में नहीं देखते और परमेश्वर के वचन के द्वारा इसकी व्याख्या नहीं करते।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

V. उपसंहार (59:52)

क्योंकि हम सिद्ध नहीं हैं, इसलिए हमें तीनों दृष्टिकोणों से लाभ लेना चाहिए ताकि नैतिक समस्याओं के बारे में हमें हर संभव जानकारी मिल सके।

तीनों दृष्टिकोणों का प्रयोग करने के द्वारा हम किसी भी दृष्टिकोण के विचारों के हर पहलू की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. मसीही नैतिक शिक्षा की हमारी परिभाषा किस प्रकार परमेश्वर और उसकी आशिषों पर ध्यान केन्द्रित करती है?

2. नैतिक शिक्षा का यह दृष्टिकोण अन्य दृष्टिकोणों की अपेक्षा अधिक विषयों को समाहित क्यों करता है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. नैतिक शिक्षा का यह दृष्टिकोण अन्य दृष्टिकोणों की अपेक्षा किस प्रकार नैतिक प्रक्रिया के अधिक पहलुओं को समाहित करता है?

4. जब कार्यों की बात आती है तो सही उद्देश्य क्यों महत्वपूर्ण होता है, और कैसे उद्देश्य सही होते हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. हमारे कार्य सही स्तर के अनुसार क्यों होने चाहिए, और नैतिक शिक्षा के लिए सही स्तर क्या है?

6. हमारे कार्यों का सही लक्ष्य क्यों होना चाहिए, और हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. इस अध्याय में बताए गए अच्छे कार्यों के त्रिरूपीय मापदण्ड को सारगर्भित कीजिए।

8. वे तीन मुख्य प्रवृतियाँ कौनसी हैं जिन पर भिन्न-भिन्न मसीही समूह नैतिक निर्णय लेने के लिए निर्भर होते हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. उन तीन दृष्टिकोणों को स्पष्ट कीजिए जिनका नैतिक शिक्षा में उपयोग किया जाता है।

10. जब हम कहते हैं कि तीनों दृष्टिकोण परस्पर कार्य करते हैं और एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं, तो इसका अर्थ क्या है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. नैतिक निर्णय लेने के बाइबल के नमूने को सारगर्भित कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. इन दो नैतिक प्रणालियों की तुलना कीजिए जिनमें से एक का परम स्तर परमेश्वर हो और दूसरी का परम स्तर परमेश्वर न हो। वे किस प्रकार एक समान हैं? वे किस प्रकार भिन्न-भिन्न हैं?

2. हमें उपयोग या लागू करने को धर्मविज्ञान के भाग के रूप में क्यों सोचना चाहिए? तब क्या खतरे हो सकते हैं जब हम उपयोग को धर्मविज्ञान की हमारी परिभाषा में शामिल नहीं करते?

3. इस विचार को स्पष्ट कीजिए कि सब भावनाओं के नैतिक परिणाम होते हैं। बाइबल के कौनसे अनुच्छेद इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हैं?

4. एक अविश्वासी और विश्वासी के एक जैसे कार्यों के बीच पाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण अंतर का वर्णन कीजिए।

5. विश्वास और प्रेम सही उद्देश्यों के मापदंड क्यों हैं? ये मापदंड परमेश्वर और उसकी नीतियों के बारे में क्या प्रकट करते हैं?

6. 2 तीमुथियुस 3:16-17 पढ़ें। नैतिक प्रशिक्षण के लिए *संपूर्ण* पवित्रशास्त्र का इस्तेमाल करने के क्या लाभ हैं?

7. निर्णय लेने में आप कौनसे दृष्टिकोण पर सबसे अधिक निर्भर रहते हैं? आपके नैतिक निर्णयों में आपका यह चुनाव आपको कौनसे लाभ या हानि पहुंचाता है?

8. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org